

भारत-रूस संबंधों की प्रगति

यह एडिटरियल 20/10/2024 को द इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित "5 ways in which India-Russia relationship will shape the world in 2025" पर आधारित है। इस लेख में भारत-रूस साझेदारी की महत्त्वपूर्ण तस्वीर प्रस्तुत की गई है जो रक्षा, ऊर्जा और वैश्विक कूटनीति में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालती है, साथ ही रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने के लिये पश्चिमी संबंधों को संतुलित करने में भारत के समक्ष आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करती है।

प्रलिस के लिये:

भारत-रूस संबंध, 1971 की शांति, मतिरता और सहयोग संधि, कूडनकूलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र, ब्रह्मोस मिसाइल, Su-30 MKI, युरेशियन आर्थिक फोरम, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा, चेन्नई-व्लादिवोस्तोक गलियारा, BRICS, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), G20, ज़पोरज़िया परमाणु संयंत्र, भारत-युरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) मुक्त व्यापार समझौता।

मेन्स के लिये:

बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत-रूस संबंधों की वर्तमान स्थिति, रूस के साथ संबंधों को आगे बढ़ाने में भारत के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

भारत-रूस संबंध वैश्विक कूटनीति में शायद सबसे महत्त्वपूर्ण द्विपक्षीय साझेदारी के रूप में उभरे हैं, जो केवल रणनीतिक सहयोग से कहीं आगे नकिल गए हैं। रूस उच्च तकनीक रक्षा और तेल आपूर्ति में भारत का सबसे अधिक अनुकूल भागीदार बना हुआ है। इस साझेदारी के माध्यम से, भारत-रूस को चीन की ओर पूरी तरह से बढ़ने से रोकता है, वैश्विक ऊर्जा बाजारों में स्थिरता सुनिश्चित करता है, और **BRICS जैसे उभरते हुए शक्ति ब्लॉक में एक उदारवादी समर्थक** बनाए रखता है।

हालाँकि भारत के लिये पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता की रक्षा करने और बदलती वैश्विक गतिशीलता के बीच इस महत्त्वपूर्ण साझेदारी को बनाए रखने के लिये सक्रिय रूप से कार्य करने की आवश्यकता है।



समय के साथ भारत और रूस के संबंध किस प्रकार विकसित हुए?

- **शीत युद्ध की एकजुटता (वर्ष 1950-1991):**
 - कश्मीर और गोवा की मुक्ति जैसे प्रमुख मुद्दों पर भारत के लिये सोवियत समर्थन साझा रणनीतिक हितों को दर्शाता है।
 - **वर्ष 1971 की शांति, मतिरता और सहयोग संधि** बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के दौरान महत्वपूर्ण थी।
- **सोवियत संघ-वधितन के बाद का समायोजन (वर्ष 1991-2000):**
 - सोवियत संघ के वधितन के बाद, भारत और रूस ने रक्षा तथा रणनीतिक संबंधों को बनाए रखने के लिये अपने संबंधों को फरि से संतुलित किया।
- **रणनीतिक साझेदारी:**
 - वर्ष 2000: **सामरिक साझेदारी घोषणा** ने सभी क्षेत्रों में सहयोग को संस्थागत रूप दिया।
 - वर्ष 2010: साझेदारी को **एक विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी** में बदल दिया गया, जो इसकी विशिष्ट गहनता को दर्शाता है।
- **हाल ही में हुए व्यापार वसितार:**
 - वतित वर्ष 2023-24 में **द्वपिक्षीय व्यापार 65.7 बलियन डॉलर** के रकिॉर्ड उच्च स्तर पर पहुँच गया, जिसमें **भारत के नरियात में 42.7% की वृद्धि** हुई और **आयात में 39.9% की गरिबट** आई, जो रूसी तेल पर नरिभरता में कमी को दर्शाता है।
 - भारत से प्रमुख नरियात: फार्मास्यूटिकलस, कार्बनिक रसायन और मशीनरी।
 - रूस से प्रमुख आयात: तेल, उरवरक और खनजि। अक्टूबर 2024 में, भारत और रूस ने उत्तरी समुद्री मार्ग पर अपनी पहली कार्य समूह बैठक बुलाई।

बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत-रूस संबंधों की वर्तमान स्थिति क्या है?

- **भू-राजनीतिक प्रतदिवंदवता के बीच रणनीतिक स्वायत्तता:** रूस के साथ भारत के संबंध रणनीतिक स्वायत्तता का उदाहरण हैं, क्योंकि नरिई दलिली किसी भी गुट के साथ गठबंधन कयि बना वैश्विक स्तर पर साझेदारी को सुदृढ कर रही है।
 - पश्चिमी प्रतबिंधों के बीच, भारत ने अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ मज़बूत संबंध बनाए रखते हुए रूस के साथ ऊर्जा एवं रक्षा संबंधों को गहन किया है।
 - जुलाई 2024 में **भारतीय प्रधानमंत्री की मासको यात्रा** के दौरान, दोनों देशों ने **भारत-रूस विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी** की रूपरेखा तैयार की, जिसका लक्ष्य वर्ष 2030 तक द्वपिक्षीय व्यापार को महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देना है।
- **आधारशला के रूप में ऊर्जा सुरक्षा:** भारत ने विश्वसनीय ऊर्जा पहुँच, वहनीयता और आपूर्ति सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये **एशिया में रूस की धुरी का लाभ** उठाया है।
 - रूसी आयात पर यूरोपीय प्रतबिंधों ने **भारत को कम लागत पर ऊर्जा सुरक्षा करने का अवसर** प्रदान किया, जिससे उसे वैश्विक तेल कीमतों की अस्थिरता से सुरक्षा मिली।
 - **रूसी तेल** अब भारत के कुल कच्चे तेल के आयात का 35% हसिसा है, जबकि वतित वर्ष 2023-24 में द्वपिक्षीय व्यापार 65.7

बलियिन डॉलर तक पहुँच गया, जो व्यावहारिक आर्थिक जुड़ाव को दर्शाता है।

• **कूडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र** में रूसी सहायता साझेदारी की आधारशिला बनी हुई है।

• **सखालिन और टॉम्स्क** जैसे रूसी तेल क्षेत्रों में भारत के निवेश से ऊर्जा संसाधनों की नरिंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

■ **रक्षा सहयोग- खरीददार से सह-विकासकर्ता तक:** रक्षा साझेदारी खरीद से सह-विकास तक परिवर्तित हो गई है, जिससे भारत की स्वदेशी क्षमताओं और रणनीतिक स्वायत्तता में वृद्धि हुई है।

• **ब्रह्मोस मिसाइल** और **Su-30 MKI** उत्पादन जैसे प्रमुख कार्यक्रम इस विकास को मूर्त रूप देते हैं।

• **रूस अभी भी भारत के रक्षा आयात का 45% आपूर्तिकरता है**, भले ही भारत **फ्रांस और इज़रायल जैसे अन्य आपूर्तिकर्ताओं** के साथ वविधिता ला रहा हो।

• वर्ष 2024 में, भारत और रूस ने **भारतीय रेलवे हेतु हाई-स्पीड इलेक्ट्रिक ट्रेनों के संयुक्त उत्पादन** को शामिल करने के लिये मेक इन इंडिया पहल का वसितार कयिा।

■ **ऊर्जा से परे आर्थिक वविधीकरण:** आर्थिक संबंध अब प्रौद्योगिकी, कृषि और वनरिमाण पर केंद्रित हो गए हैं, जिससे **तेल पर नरिभरता कम होती है** तथा आपसी विकास को बढ़ावा मलिता है।

• **रुपया-रूबल व्यापार तंत्र** और **यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU)** के साथ **FTA वार्ता** इस बदलाव को दर्शाती है।

• वर्ष 2024 में **रूस को नरियात में 42.7% की वृद्धि** हुई, जिसमें फार्मास्यूटिकल्स और मशीनरी सबसे आगे रहे।

■ **वैश्विक व्यापार को नया स्वरूप देने के लिये कनेक्टविटी: अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा** और **चेन्नई-व्लादिवोस्तोक गलियारा** जैसी भारत-रूस कनेक्टविटी परियोजनाएँ पारंपरिक मार्गों को दरकिनार करती हैं, जिससे अस्थिर समुद्री चोकपॉइंट्स पर नरिभरता कम होती है।

• ये मार्ग **रसद दक्षता को बढ़ाते हैं और व्यापार समय को कम करते हैं।**

• **INSTC शपिगि समय को 40% तक कम करता है**, जबकि **चेन्नई-व्लादिवोस्तोक कॉरडोर पारगमन दनों को 40 से घटाकर 24 कर देता है**, जिससे द्वपिक्षीय व्यापार दक्षता को बढ़ावा मलिता है।



■ **बहुपक्षीय मंचों में भू-राजनीतिक तालमेल:** भारत और रूस **बहुधरुवीय वशिव के लिये एक दृष्टिकोण साझा** करते हैं तथा पश्चिमी प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिये **BRICS, शंघाई सहयोग संगठन (SCO)** तथा **G20** जैसे मंचों पर सहयोग करते हैं।

• वे डॉलर के वरचस्व को कम करने के लिये स्थानीय मुद्रा व्यापार का समर्थन करते हैं। **BRICS शखिर सम्मेलन 2024** में, भारत और रूस ने वैकल्पिक ववित्तीय प्रणालियों पर ज़ोर दिया, जो भारत के रुपया-मूल्यवान व्यापार के लिये जोर के साथ संरेखित है।

■ **प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष सहयोग:** साझेदारी **AI, जैव प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष अन्वेषण** जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों तक फैली हुई है, जो एक **दूरदर्शी आयाम** को दर्शाती है। भारत और रूस **संयुक्त रूप से उपग्रह नेवगिशन तथा चंद्र मशिन** को बढ़ाते हैं।

• **GLONASS उपग्रह नेवगिशन** पर साझेदारी उच्च तकनीक तालमेल को प्रदर्शाति करती है।

• वर्ष 2024 में, भारत और रूस ने **चंद्र तथा मानव अंतरिक्ष मशिनों सहित उन्नत अंतरिक्ष अनुसंधान पर सहयोग करने की प्रतबिद्धताओं** को नवीनीकृत कयिा।

रूस के साथ संबंधों को आगे बढ़ाने में भारत के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं?

■ **पश्चिमी देशों और रूस के साथ संबंधों में सामंजस्य:** भारत के अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ बढ़ते संबंध, वशिष रूप से क्वाड जैसे मंचों तथा यूरोपीय संघ तथा बरटिन के साथ व्यापार समझौतों की वार्ता के माध्यम से, रूस के साथ उसके संबंधों को जटलि बनाते हैं।

• रूस के वरिद्ध प्रतबिद्धों का समर्थन करने के **पश्चिमी दबाव के परिणामस्वरूप भारत की सामरिक स्वायत्तता खतरे में है।**

• पश्चिमी देशों की आलोचना के बावजूद, रूस वर्ष 2023 में भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता रहा। **रूस से ऊर्जा आपूर्ति** की भारत

की वृहद खरीद ने अमेरिकी अधिकारियों को चिन्तित कर दिया है, जिनहोंने 'परणिामों' की धमकी भी दी है, लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि वे भारत के तेल आयात पर 'लाल रेखाएँ' नहीं लगाएंगे।

- **व्यापार घाटे का प्रबंधन:** रूस के साथ भारत का व्यापार बहुत अधिक वषिम है, आयात (अधिकतर तेल और उर्वरक) नरियात से बहुत अधिक है, जिससे एक महत्त्वपूर्ण व्यापार असंतुलन होता है। नरियात का सीमति वविधीकरण इस मुद्दे को और जटलि बनाता है।
 - वतित वर्ष 2023-24 में, रूस को भारत का नरियात 4.26 बलियिन डॉलर रहा, जबकि आयात 61.44 बलियिन डॉलर तक पहुँच गया, जिसके परणिामस्वरूप 57.18 बलियिन डॉलर का व्यापार घाटा हुआ।
 - हालाँकि दवा नरियात में 42.7% की वृद्धि हुई, लेकिन अंतर को कम करने के लिये अपर्याप्त है।
- **वतितीय और रसद संबंधी चुनौतियाँ:** रूस पर पश्चिमी प्रतबिंधों ने भारत-रूस व्यापार के लिये वतितीय लेन-देन, नविश और रसद को जटलि बना दिया है, जिससे लागत एवं अनश्चितता बढ़ गई है।
 - रुपया-रुबल व्यापार जैसी व्यवस्थाओं को कर्यानवयन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
 - स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को सुवधाजनक बनाने के लिये वोस्दरो खाता प्रणाली बनाई गई थी, लेकिन द्वितीयक प्रतबिंधों के भय सेजि बैंकों की अनच्छिा के कारण इसका अंगीकरण धीमा रहा है।
- **रूस-चीन नकिटता को समझना:** रूस का चीन के साथ बढ़ता गठबंधन, वशेष रूप से आर्कटिक और ऊर्जा परयोजनाओं में, भारत के लिये रणनीतिक दुवधाएँ प्रस्तुत करता है।
 - रूस के सुदूर पूर्व में चीन का बढ़ता प्रभाव भारत की कनेक्टविटी महत्त्वाकांक्षाओं को भी प्रभावित करता है।
 - वर्ष 2023 में रूस-चीन व्यापार आर्कटिक में प्रमुख नविश के साथ \$200 बलियिन से अधिक हो गया। जबकि भारत ने चेन्नई-व्लादिवोस्तोक कॉरिडोर को चालू कर दिया है, उत्तरी समुद्री मार्ग में चीन की भागीदारी भारत की पहुँच को सीमति कर सकती है।
- **बहुपक्षीय दबाव और मतदान से परहेज:** यूक्रेन जैसे वैश्विक संकटों पर अलग-अलग रुख के कारण भारत का संतुलन बगिड़ गया है, जहाँ भारत की तटस्थ स्थिति **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं की अपेक्षाओं के वपिरीत है।
 - उदाहरण के लिये, जुलाई 2024 में, भारत ने संयुक्त राष्ट्र के उस प्रस्ताव से परहेज किया जिसमें रूस से यूक्रेन के खिलाफ आक्रामकता बंद करने और **जपोरजिया परमाणु संयंत्र** से हटने की मांग की गई थी। इससे भारत की कूटनीतिक भागीदारी ध्रुवीकृत हो गई।
 - वर्ष 2024 के **G20** शिखर सम्मेलन में, भारत ने तटस्थता बनाए रखते हुए रूस की नदि करने से परहेज किया।
- **मध्य एशिया में भू-राजनीतिक अनश्चितता:** भारत की रणनीतिक पहल, जैसे INSTC, मध्य एशिया (एक ऐसा क्षेत्र जो हाल ही में चीनी उपस्थिति से काफी प्रभावित हो रहा है) के माध्यम से स्थायी कनेक्टविटी पर निर्भर करती है।
 - इन राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता भारत की पहुँच को जटलि बनाती है। उदाहरण के लिये, INSTC व्यापार की मात्रा ईरान के आंतरिक व्यवधानों और इस गलियारे के लिये एक प्रमुख पारगमन देश **कजाकस्तान** में भू-राजनीतिक तनाव के कारण वलिंब का सामना करना पड़ता है।

भारत अस्त-व्यस्त वैश्विक व्यवस्था के बीच रूस के साथ संबंधों को संतुलित करने के लिये क्या उपाय अपना सकता है?

- **ऊर्जा से परे आर्थिक जुड़ाव में वविधिता लाना:** भारत को प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और कृषि जैसे क्षेत्रों का लाभ उठाकर तेल एवं रक्षा से परे रूस के साथ व्यापार का वसितार करना चाहिये।
 - **भारत-यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) मुक्त व्यापार समझौते** में तेज़ी लाने और नज्जि क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने से गैर-ऊर्जा व्यापार को बढ़ावा मलि सकता है।
 - मशीनरी और रसायन जैसे क्षेत्रों में **सुव्यवस्थित व्यापार तंत्र** के तहत आगे वसितार की संभावना दिखाई देती है।
- **मेक इन इंडिया के तहत रक्षा सह-विकास को बढ़ावा:** भारत रूस के साथ अपनी रक्षा साझेदारी को खरीद से सह-विकास में बदल सकता है, जो मेक इन इंडिया लक्ष्यों के साथ संरेखित संयुक्त उद्यमों पर केंद्रित है।
 - **सह-उत्पादन न केवल प्रौद्योगिकी अंतरण** सुनिश्चित करता है **बल्कि निर्भरता को भी कम करता है**, जो भारत के वैश्विक रक्षा वनिरिमाण केंद्र बनने के लक्ष्य के साथ संरेखित है।
- **आर्कटिक सहयोग और ऊर्जा सुरक्षा पहल का वसितार:** भारत को रूस के साथ संयुक्त आर्कटिक परयोजनाओं में शामिल होना चाहिये, जो उत्तरी समुद्री मार्ग (NSR) के माध्यम से ऊर्जा अन्वेषण और शपिगि पर केंद्रित है।
 - **LNG अवसंरचना और ध्रुवीय नेवगिशन प्रशिक्षण** में नविश भारत के दीर्घकालिक ऊर्जा एवं व्यापार हतियों को सुरक्षित करेगा।
 - **अक्टूबर 2024 आर्कटिक सहयोग कार्यक्रम** ने ऊर्जा संसाधनों के आयात के लिये **NSR का प्रयोग करने के भारत के उद्देश्य** पर प्रकाश डाला, जिससे रणनीतिक और आर्थिक लाभ मलि सके।
- **सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ावा:** सांस्कृतिक कूटनीति और लोगों के बीच संबंधों का वसितार दीर्घकालिक द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत कर सकता है।
 - **रूस में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र** स्थापित करने और **रूसी छात्रों को भारत में अध्ययन करने के लिये प्रोत्साहित करने** जैसी पहल **सदभावना का नरिमाण** कर सकती हैं।
 - वर्ष 2024 में **भारत द्वारा कज़ान और एकातेरनिबर्ग में दो नए वाणज्य दूतावासों की घोषणा** गहन शैक्षिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिये एक मंच प्रदान करती है।
- **अक्षय ऊर्जा सहयोग पर ध्यान:** भारत को सौर, पवन और हाइड्रोजन सहित अक्षय ऊर्जा में संयुक्त उद्यमों को बढ़ावा देकर रूस के साथ अपनी ऊर्जा साझेदारी में वविधिता लानी चाहिये।
 - यह रूस के साथ अपने ऊर्जा सहयोग को बनाए रखते हुए **भारत के हरति संक्रमण लक्ष्यों के अनुरूप** है।
 - भारत का **अक्षय ऊर्जा क्षेत्र 250 बलियिन डॉलर से अधिक नविश** आकर्षित करने के लिये तैयार है, जो रूस को भारत की **हरति ऊर्जा महत्त्वाकांक्षाओं में भागीदार** बनने के लिये पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

- **क्षेत्र-वशिष्ट रणनीतियों के माध्यम से व्यापार घाटे को कम करना:** व्यापार असंतुलन को दूर करने के लिये, भारत को उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये जहाँ उसे प्रतस्पर्धात्मक लाभ है, जैसे कि IT सेवाएँ, वस्त्र और खाद्य प्रसंस्करण।
 - भारतीय निर्यातकों के लिये रूस में **वशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (SEZ)** स्थापित करने से निर्यात को बढ़ावा मिल सकता है।
- **सामरिक कटनीति के साथ रूस-चीन गतिशीलता को नेवगिट करना:** भारत को यह सुनिश्चित करने के लिये रूस के साथ युक्तपूर्वक जुड़ना चाहिये कि रूस-चीन संबंधों के कारण उसके रणनीतिक हित प्रभावित न हों।
 - **आर्कटिक, क्षेत्रीय बुद्धिमत्ता, दुर्लभ मृदा तत्त्व और अंतरिक्ष अन्वेषण** जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में वैकल्पिक निवेश एवं सहयोग की पेशकश भारत की प्रसंगिकता बनाए रख सकती है।
- **उर्वरक उत्पादन में संयुक्त उद्यम स्थापित करना:** भारत कच्चे माल के निष्कर्षण में रूसी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए आयात पर अपनी निर्भरता कम करने के लिये भारत में उर्वरक **निर्माण संयंत्र स्थापित करने में रूसी निवेश** को आमंत्रित कर सकता है।
 - वर्ष 2023 में, रूस से भारत के आयात में उर्वरकों की **हसिसेदारी 2.63 बिलियन डॉलर** थी। उत्पादन को स्थानीय बनाने से लागत में कमी आएगी और भारत की कृषि आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।
- **साइबर सुरक्षा और डिजिटल सहयोग को बढ़ावा देना:** डिजिटल प्रौद्योगिकियों पर बढ़ती वैश्विक निर्भरता को देखते हुए, भारत **साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क, AI अनुसंधान और डिजिटल बुनियादी अवसंरचना को मजबूत करने के लिये रूस के साथ साझेदारी** कर सकता है।
 - **डेटा सुरक्षा प्रौद्योगिकियों में संयुक्त उद्यम** द्विपक्षीय संबंधों में विविधता लाते हुए पारस्परिक लाभ सुनिश्चित कर सकते हैं।
 - साइबर सुरक्षा उपकरणों में **रूस की विशेषज्ञता** भारत की बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था का पूरक है।
- **रणनीतिक पर्यटन गठबंधनों को बढ़ावा देना:** भारत और रूस विशेष यात्रा पैकेज, संयुक्त सांस्कृतिक उत्सव तथा **सरलीकृत वीजा प्रक्रियाएँ बनाकर द्विपक्षीय पर्यटन** को बढ़ावा दे सकते हैं।
 - सीधे हवाई मार्गों और पर्यटन विपणन अभियानों का **वसितार लोगों से लोगों के बीच संबंधों को बढ़ावा** दे सकता है।
- **यूरेशियन अध्ययनों पर केंद्रित अकादमिक अनुसंधान केंद्र बनाना:** भारत **रूसी राजनीति, संस्कृति और अर्थशास्त्र पर अध्ययन को बढ़ावा** देने के लिये **यूरेशियन अनुसंधान केंद्र** स्थापित कर सकता है।
 - ये केंद्र भारतीय नीति-निर्माताओं और व्यवसायों को रूस व उसके पड़ोसियों के बारे में **सूचिति निर्णय लेने के लिये मार्गदर्शन** कर सकते हैं।
 - **जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और रूसी विश्वविद्यालयों जैसे संस्थानों के बीच साझेदारी** विद्वानों के आदान-प्रदान को बढ़ा सकती है, जिससे क्षेत्र की गहन समझ में योगदान मिल सकता है।

निष्कर्ष:

भारत-रूस संबंध बदलती वैश्विक व्यवस्था के बीच भारत की रणनीतिक विदेश नीतिकी आधारशिला है। **यद्यपरिक्षा, ऊर्जा और बहुपक्षीय कटनीति जैसे क्षेत्रों में साझेदारी** लगातार बढ़ रही है, फरि भी व्यापार असंतुलन, रसद बाधाओं एवं रूस की चीन के साथ बढ़ती नकटता जैसी चुनौतियों से सावधानीपूर्वक निपटने की आवश्यकता है। आर्थिक संबंधों में विविधता लाकर, कनेक्टिविटी बढ़ाकर और उभरते क्षेत्रों में संयुक्त उद्यमों को बढ़ावा देकर, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि रूस के साथ उसके संबंध मजबूत बने रहें एवं वैश्विक कटनीति में सकारात्मक योगदान दें।

???????? ???? ???? ????:

प्रश्न. "भारत-रूस संबंध समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं, लेकिन बदलती वैश्विक गतिशीलता इस साझेदारी के लिये नई चुनौतियाँ और अवसर प्रस्तुत करती है।" चर्चा कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष का प्रश्न

????????????????:

प्रश्न1. हाल ही में भारत ने नमिनलखिति में से कसि देश के साथ 'नाभकीय क्षेत्र में सहयोग क्षेत्रों के प्राथमकीकरण और कार्यान्वयन हेतु कार्य योजना' नामक सौदे पर हस्ताक्षर कयिा है?

- जापान
- रूस
- यूनाइटेड किंगडम
- संयुक्त राज्य अमेरीका

उत्तर: (b)

प्रश्न2. भारत-रूस रक्षा समझौतों की तुलना में भारत-अमेरिका रक्षा समझौतों की क्या महत्ता है? हदि-प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में स्थायित्व के संदर्भ में विचिना कीजिये।

